

संयुक्त एवं एकल परिवारों के विद्यार्थियों के समायोजन की समस्या एवं शैक्षिक उपलब्धि : एक अध्ययन

डॉ० खेमेन्द्र कुमार शर्मा

असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग

Email: kksjtt2020@gmail.com



Received 05 June 2026

Accepted 12 June 2026

Published 30 June 2026

Corresponding Author:

डॉ० खेमेन्द्र कुमार शर्मा

Email: kksjtt2020@gmail.com

DOI: <https://doi.org/10.64880/pcjaict.v1i2.05>

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sector.

Copyright: © 2026 The Author(s).



This is an open access article under the [Creative Commons Attribution-Noncommercial 4.0 International License](https://creativecommons.org/licenses/by-nc/4.0/).

OPEN ACCESS

सारांश:

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य संयुक्त एवं एकल परिवारों से आने वाले विद्यार्थियों की समायोजन संबंधी समस्याओं तथा उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना है। परिवार बालक के सामाजिक, भावनात्मक एवं शैक्षिक विकास की आधारभूत इकाई है। परिवार की संरचना, पारिवारिक वातावरण, अभिभावकों का सहयोग तथा पारस्परिक संबंध विद्यार्थियों के व्यक्तित्व और विद्यालयी जीवन को प्रभावित कर सकते हैं। वर्तमान अध्ययन में यह जानने का प्रयास किया गया है कि संयुक्त तथा एकल परिवारों से आने वाले विद्यार्थियों के समायोजन के विभिन्न आयामों जैसे सामाजिक, भावनात्मक, पारिवारिक एवं शैक्षिक समायोजन में क्या अंतर पाया जाता है तथा इनका उनकी शैक्षिक उपलब्धि से क्या संबंध है। इस अध्ययन के लिए वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जा सकता है। अध्ययन में संयुक्त एवं एकल परिवारों से संबंधित विद्यार्थियों का चयन किया जाएगा। विद्यार्थियों के समायोजन का मापन मानकीकृत समायोजन मापनी तथा शैक्षिक उपलब्धि का मापन परीक्षा परिणाम अथवा उपलब्धि परीक्षण के आधार पर किया जा सकता है। प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण मध्यमान, मानक विचलन तथा 'ज' परीक्षण सहसंबंध जैसी सांख्यिकीय विधियों द्वारा किया है। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर विद्यार्थियों के समायोजन एवं शैक्षिक विकास के लिए परिवार और विद्यालय की भूमिका को समझने में सहायता मिल सकती है।

मुख्य शब्द : संयुक्त परिवार, एकल परिवार, समायोजन, शैक्षिक उपलब्धि, विद्यार्थी, पारिवारिक वातावरण।

प्रस्तावना

मानव विकास की प्रक्रिया में परिवार का महत्वपूर्ण स्थान है। बालक अपने जीवन के प्रारंभिक वर्षों में परिवार से ही भाषा, व्यवहार, सामाजिक मूल्य, अनुशासन तथा पारस्परिक संबंधों की जानकारी प्राप्त करता है। परिवार का वातावरण उसके व्यक्तित्व निर्माण और भावनात्मक विकास को प्रभावित करता है। भारतीय समाज में पारंपरिक रूप से संयुक्त परिवार व्यवस्था

का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। संयुक्त परिवार में कई पीढ़ियों के सदस्य एक साथ रहते हैं, जिसके कारण बच्चों को अधिक लोगों के साथ रहने और विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों में व्यवहार करने का अवसर प्राप्त होता है। इसके विपरीत, एकल परिवार में सामान्यतः माता-पिता और उनके बच्चे साथ रहते हैं। दोनों प्रकार की पारिवारिक संरचनाओं की अपनी विशेषताएँ हैं। विद्यार्थी के जीवन में विद्यालय, परिवार और साथियों के समूह का महत्वपूर्ण योगदान होता है। विद्यार्थी को परिवार तथा विद्यालय दोनों स्थानों पर विभिन्न परिस्थितियों के साथ समायोजन करना पड़ता है। यदि विद्यार्थी अपने परिवार, विद्यालय तथा सामाजिक वातावरण के साथ उचित समायोजन स्थापित नहीं कर पाता, तो इसका प्रभाव उसके व्यवहार, आत्मविश्वास, अध्ययन-अभिरुचि और शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ सकता है। भारतीय समाज और संस्कृति की अपनी एक विशिष्ट जीवन विधि रही है। यद्यपि समय-समय पर बाहर से आने वाली संस्कृतियों के सम्पर्क के कारण इनमें परिवर्तन एवं संशोधन होते रहे हैं। समन्वय और सहिष्णुता की प्रकृति के कारण धर्म, संगीत, चित्रकला, वास्तुकला, साहित्य और समाज व्यवस्था में एक तरफ जहाँ अनेक विविधताएँ पनपी वहीं दूसरी तरफ भारतीय समाज समृद्ध भी हुआ तथा अपने निजी विचारों एवं सिद्धान्तों के कारण भारतीय परम्परा एवं जीवन विधि बनी

रही। संस्कृति के सभी स्तरों में चाहे उन्हें उन्नत कहा जाये या निम्न, किसी न किसी प्रकार का पारिवारिक संगठन अनिवार्यतः पाया जाता है। प्राणी शास्त्रीय सम्बन्धों के आधार पर बने हुए समूहों में परिवार सबसे छोटी इकाई है। प्रत्येक मनुष्य किसी न किसी परिवार का सदस्य होता है। “समाज में परिवार ही अत्यधिक

महत्वपूर्ण समूह है। मानव की स्वस्थ सामाजिक संस्थाओं में परिवार एक आधारभूत और सर्वव्यापी सामाजिक संस्था है। परिवार मानव जाति के आत्म संरक्षण, वंशवृद्धि और जातीय जीवन की निरन्तरता बनाये रखने का प्रमुख साधन है। मनुष्य मरणशील है, किन्तु मानव जाति अमर है, मृत्यु और अमरत्व इन दो विरोधी अवस्थाओं का समन्वय परिवार में ही हुआ है।”

प्रमुख अवधारणाओं की कार्यात्मक परिभाषाएँ

संयुक्त परिवार :-

एक संयुक्त परिवार में तीन या तीन से अधिक पीढ़ियों के सदस्य साथ एक ही घर में निवास करते हैं। उनकी सम्पत्ति सामूहिक होती है। वे एक ही रसोई में बना भोजन करते हैं, सामूहिक पूजा में भाग लेते हैं, और परस्पर किसी न किसी नातेदारी व्यवस्था से सम्बन्धित होते हैं। संयुक्त परिवार के सदस्य एक दूसरे के प्रति अधिकारों और दायित्व को निभाते हैं। संयुक्त परिवार के मूल में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि परिवार के सदस्य एक ही छत के नीचे रहें और आपसी समझ और सहयोग से एक-दूसरे की मदद करें इस अध्ययन में संयुक्त परिवार से आशय ऐसे परिवार से है जिसमें माता-पिता, बच्चे तथा अन्य निकट संबंधी परिवार के सदस्य एक ही पारिवारिक इकाई के रूप में साथ रहते हैं।

दूबे के अनुसार, “यदि कई मूल परिवार एक साथ रहते हो और उनमें निकट का नाता हो, एक स्थान पर भोजन करते हों और एक आर्थिक इकाई के रूप में कार्य करते हो तो उन्हें उनके सम्मिलित रूप में संयुक्त परिवार कहा जाता है।”

एकल परिवार

एकल परिवार से आशय ऐसे परिवार से है जिसमें मुख्यतः माता-पिता एवं उनके अविवाहित बच्चे साथ रहते हैं। एकल परिवार आधुनिक औद्योगिक समाजों की प्रमुख विशेषता है।

औद्योगीकरण और नगरीकरण के बढ़ने के साथ साथ इस प्रकार के परिवारों की संख्या बढ़ती जा रही है। जहाँ कृषि प्रधान समाजों में संयुक्त परिवार व्यवस्था की प्रधानता पाई जा रही है, वहीं औद्योगिक समाजों में केन्द्रीय या नाभिक परिवारों की।

आज की बदली हुई परिस्थितियों में परिवार की संयुक्तता को बनाये रखना कठिन हो गया है। आधुनिक सभ्यता एवं संस्कृति के प्रसार तथा भौतिकवादी एवं व्यक्तिवादी दृष्टिकोण के विकास ने एकाकी परिवारों को बढ़ावा दिया है।

समायोजन

समायोजन वह पथ है, जिस पर चलते हुए हम ऐसे वातावरण में जो कभी सहायक है, तो कभी जटिल है! और कभी हानिकारक है, अपनी आवश्यकताओं की तुष्टि करते हैं। हमारे समायोजित होने की प्रक्रिया केवल तभी घटित होती है, जब हमारी कुछ आवश्यकताएँ हो, जब हम उन आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु अनेक मार्ग चुनते हैं, और जब पर्यावरण, जिसमें कि हमें संतुष्टियाँ ढूँढ़नी है, हमारे प्रति तटस्थ या विरोधी बना रहे।" समायोजन से आशय व्यक्ति की उस क्षमता से है जिसके द्वारा वह अपने व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक एवं शैक्षिक वातावरण की परिस्थितियों के साथ संतुलित एवं प्रभावी व्यवहार स्थापित करता है।

आईर्जेनेक के अनुसार – "समायोजन वह अवस्था है, जिसमें एक तरफ व्यक्ति की आवश्यकताएँ होती है और दूसरी तरफ वातावरण के अधिकारों में पूर्ण संतुष्टि होती है अथवा समायोजन वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा इन दोनों अवस्थाओं में सन्तोषजनक तालमेल होता है।"

कॉल्लेमैन के अनुसार – "समायोजन व्यक्ति द्वारा अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति एवं कठिनाइयों का सामना करने के प्रयास का परिणाम है।"

स्किनर के अनुसार – "समायोजन एक अधिगम प्रक्रिया है।"

शैक्षिक उपलब्धि

व्यक्ति अपने जीवन में विभिन्न क्रियाओं के द्वारा अनेक प्रकार का ज्ञान एवं कौशल प्राप्त करता है। वह ज्ञान एवं कौशल उसकी उपलब्धि कहलाती है। शैक्षिक उपलब्धि से आशय विद्यार्थी द्वारा किसी निर्धारित शैक्षिक अवधि में प्राप्त अंकों अथवा मानकीकृत उपलब्धि परीक्षण में प्राप्त प्रदर्शन से है। उपलब्धि के क्षेत्र भिन्न-भिन्न होते हैं, जैसे – एक व्यक्ति विज्ञान के क्षेत्र में, एक खेल के क्षेत्र में, एक सामाजिक क्षेत्र में, अपने कौशल की स्थापना करता है। वह कौशल स्थापना उच्च, मध्यम एवं निम्न स्तर की होती है, इसी प्रकार शिक्षा के क्षेत्र में स्थापित ज्ञान का कौशल शैक्षिक उपलब्धि कहलाता है।

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन :-

1 विश्वकर्मा, विजयप्रताप (2001) ने – "सामान्य एवं दृष्टिबाधित बालक, बालिकाओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन" विषय पर पी-एच.डी. स्तरीय शोध किया और निष्कर्ष में पाया कि – दृष्टिबाधित बालक एवं बालिकाओं की समायोजन प्रवृत्तियाँ उल्लेखनीय ही नहीं बल्कि सामान्य बालक-बालिकाओं की अपेक्षा श्रेष्ठतर पायी गयी। यद्यपि दोनों ही समूहों में विभिन्न प्रकार की समायोजन समस्याएँ यथा समाज विरोधी प्रवृत्ति, प्रत्याहार प्रवृत्ति, घबराहट की प्रवृत्ति, सामाजिक कौशल, आक्रामक प्रवृत्ति एवं अपर्याप्तता की भावना से सम्बन्धित पायी गई। दृष्टिबाधित बालकों में घबराहट की प्रवृत्ति एवं अपर्याप्तता की भावना एवं बालिकाओं में अपर्याप्तता की भावना सहित प्रत्याहार के स्तर पर समायोजन की समस्या सामान्य बालक बालिकाओं की अपेक्षा अधिक पायी गई।"

2 पाल, एस. के. एवं खान, मोहसिन (2005) ने "छात्र – छात्राओं के प्रतियोगितात्मक व्यवहार का शैक्षणिक उपलब्धि एवं जोखिम उठाने सम्बन्धी योग्यता पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन" विषय पर शोध कार्य में भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका (जनवरी – जून 2005) में यह निष्कर्ष निकाला कि छात्र- छात्राओं के प्रतियोगितात्मक व्यवहार एवं शैक्षणिक

उपलब्धियों में धनात्मक सह सम्बन्ध है। अतः स्पष्ट है कि छात्र-छात्राओं में प्रतियोगितात्मक व्यवहार बढ़ने पर शैक्षणिक उपलब्धि भी बढ़ती है। प्रतियोगितात्मक व्यवहार कम होने पर शैक्षणिक उपलब्धि भी कम होती है।

3 शर्मा, सरिता (2006) ने –“महाविद्यालयी शिक्षकों द्वारा अवलोकित स्ववित्तपोषित महाविद्यालय के संस्थागत वातावरण तथा उनकी समायोजन समस्याओं का सम्बन्ध: एक अध्ययन” विषय पर पी-एच.डी. स्तरीय शोध कार्य किया और अध्ययन में पाया कि महाविद्यालयी शिक्षकों द्वारा अवलोकित स्ववित्तपोषित

महाविद्यालयों के संस्थागत वातावरण तथा उनकी समायोजन समस्याओं में लिंग भेद, आर्थिक सामाजिक स्तर तथा क्षेत्र विषेश के परिप्रेक्ष्य में अन्तर पाया गया। पुरुष शिक्षक, महिला शिक्षकों की तुलना में अधिक समायोजित थे।”

अध्ययन का महत्व

यह अध्ययन शिक्षकों, अभिभावकों, विद्यालय प्रशासकों तथा शैक्षिक परामर्शदाताओं के लिए उपयोगी हो सकता है। अध्ययन से यह समझने में सहायता मिल सकती है कि विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण और उनकी समायोजन संबंधी आवश्यकताओं को किस प्रकार समझा जाए। यदि किसी विद्यार्थी को परिवार या विद्यालय में समायोजन संबंधी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है, तो शिक्षक एवं अभिभावक उसके व्यवहार और शैक्षिक प्रदर्शन को केवल उसकी व्यक्तिगत क्षमता के आधार पर न देखकर उसके सामाजिक एवं पारिवारिक वातावरण को भी ध्यान में रख सकते हैं।

समस्या का कथन

“संयुक्त एवं एकल परिवारों के विद्यार्थियों के समायोजन की समस्या एवं शैक्षिक उपलब्धि : एक अध्ययन”

अध्ययन के उद्देश्य

इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं

1. संयुक्त एवं एकल परिवारों से आने वाले विद्यार्थियों के समायोजन स्तर का अध्ययन करना।
2. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
3. संयुक्त एवं एकल परिवारों से आने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर का अध्ययन करना।
4. विद्यार्थियों के समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि के बीच संबंध का अध्ययन करना।
5. पारिवारिक संरचना और विद्यार्थियों के समायोजन पर उसके संभावित प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

1. संयुक्त एवं एकल परिवारों से आने वाले विद्यार्थियों के समायोजन स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।
2. संयुक्त एवं एकल परिवारों से आने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।
3. विद्यार्थियों के समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक संबंध नहीं होगा।
4. संयुक्त एवं एकल परिवारों से आने वाले विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।
5. संयुक्त एवं एकल परिवारों से आने वाले विद्यार्थियों के भावनात्मक समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

अध्ययन का सीमांकन

प्रस्तुत शोधकार्य रामपुर जिले की तहसील मिलक के संयुक्त एवं एकल परिवार के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के 200 विद्यार्थियों तक सीमित है।

अनुसंधान विधि

अनुसंधान की प्रकृति

प्रस्तुत अध्ययन के लिए वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है।

जनसंख्या

अध्ययन की जनसंख्या में चयनित क्षेत्र के माध्यमिक, उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थी शामिल किए हैं।

न्यादर्श

अध्ययन के लिए 200 विद्यार्थियों का चयन किया है

- संयुक्त परिवार से 100 विद्यार्थी
- एकल परिवार से 100 विद्यार्थी

न्यादर्श चयन विधि

विद्यार्थियों के चयन के लिए स्तरीकृत यादृच्छिक नमूना अथवा उपयुक्त नमूना चयन विधि का प्रयोग किया है।

शोध उपकरण

अध्ययन में निम्न उपकरणों का प्रयोग किया है

- 1— समायोजन अनुसूची मापनी : ए. के. पी. सिन्हा एवं आर. पी. सिंह
- 2— शैक्षिक उपलब्धि मापनी : स्वनिर्मित मापनी।

ऑकड़ों का विश्लेषण

अध्ययन के उद्देश्यों के अनुसार निम्न सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है

- मध्यमान (डमंद)
- मानक विचलन (Standard Deviation)
- 't' परीक्षण
- सहसंबंध गुणांक (Correlation)

निष्कर्ष

अध्ययन के ऑकड़ों के आधार पर निम्न प्रकार के निष्कर्ष प्राप्त हो सकते हैं

1. संयुक्त एवं एकल परिवारों से आने वाले विद्यार्थियों के समायोजन स्तर में अंतर है
2. संयुक्त एवं एकल परिवारों से आने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया है।
3. बेहतर समायोजन और शैक्षिक उपलब्धि के बीच सकारात्मक संबंध पाया गया है,
4. संयुक्त एवं एकल परिवारों से आने वाले विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
5. संयुक्त एवं एकल परिवारों से आने वाले विद्यार्थियों के भावनात्मक समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

शैक्षिक सुझाव

अध्ययन के आधार पर निम्न सुझाव दिए जा सकते हैं

1. विद्यालयों में विद्यार्थियों के लिए नियमित परामर्श एवं मार्गदर्शन की व्यवस्था की जानी चाहिए।
2. शिक्षकों को विद्यार्थियों की व्यक्तिगत एवं पारिवारिक परिस्थितियों के प्रति संवेदनशील होना चाहिए।
3. अभिभावकों को बच्चों के साथ सकारात्मक एवं सहयोगात्मक संवाद स्थापित करना चाहिए।

4. विद्यार्थियों को अपनी भावनाओं और समस्याओं को व्यक्त करने के लिए सुरक्षित वातावरण उपलब्ध कराया जाना चाहिए।
5. विद्यालय एवं अभिभावकों के बीच नियमित संवाद को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।
6. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का मूल्यांकन करते समय उनके सामाजिक एवं भावनात्मक पक्षों को भी ध्यान में रखा जाना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- 1 अस्थाना 1, विपिन (1994) : "मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन विनोद पुस्तक मन्दिर,आगरा उ. प्र. पृ.स. 170
2. अग्रवाल, ईश्वर प्रकाश एवं अनिता, (1995)"बाल विकास एवं शैक्षिक क्रियाएँ" आर्य बुकडिपो करोल बाग, नई दिल्ली, पृ. सं. 137.
3. अरोड़ा, रीता एवंमारवाह,सुरेश (2001) "शिक्षा मनोविज्ञान एवं सांख्यिकी के आधार"23 चौड़ा रास्ता, जयपुर पृ.सं.43
4. आचार्य, पं. शर्मा श्रीराम (1995)"भारतीय संस्कृति के आधारों भूत तत्व"अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा प्रथम संस्करण,पृ.स. 3, 136, 3. 138, 4.174
5. आचार्य, पं. शर्मा श्रीराम (1996)"शिक्षा एवं विद्या,"अखण्ड ज्योति संस्थान,मथुरा," प्रथम संस्करण, पृ.स. 114,1.37,1.104.2. 24, 3.13,3.35
- 6 चौबे,सरयूप्रसाद (1956)"बाल विकास", भारत पब्लिकेशन आगरा पृ.सं. 165, 171, 173
- 7 जायसव बाल मनोविज्ञान,सीताराम(1992)संवेग तथा अभिप्रेरेणा काविकास, विनोद पुस्तक मंदिर बरगारा पृष्ठ संख्या-108,109,114, 118,119,120
- 8 जरशिल्ड, ए.टी.(1977)"किषोर मनोविज्ञान", बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पृष्ठ सं. 21,431-33,
- 9 देसाई, ए. आर.(1986) : "भारत में शहरी परिवार और परिवार नियोजन"
- 10 पारीक, मथुरेश्वर,(2002) "बालविकास एवं पारिवारिक सम्बन्ध" रिसर्च पब्लिकेशनस् त्रिपोलिया बाजार जयपूर (2002) पृ. 99, 161, 177
11. पाण्डेय, सत्यप्रकाश एवं शर्मा, रजनी(2007) "शिक्षा एवं भारतीय समाज" चौड़ा रास्ता जयपुर

Disclaimer/Publisher's Note: The views, findings, and opinions expressed in this publication are solely those of the author(s). The publisher and editorial team are not responsible for any errors, claims, or consequences arising from the use of the published content.